आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 12/05/2022; Accepted: 15/06/2022; Published: 24/06/2022

पुस्तक समीक्षा

अद्भुत है यह जंगल-गीत की श्रृंखला

डॉ० आशोक प्रियदर्शी

डॉ० आशोक प्रियदर्शी, **अद्भुत है यह जंगल-गीत की श्रृंखला**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(369-374)

कुमार मनीष अरविन्द की सद्यःप्रकाशित एक सौ आठ गीत-खण्डों वाली पुस्तक 'चल जंगल चल' की बात कर रहा हूँ मैं।

मेरे एक मित्र कहते थे कि कुछ लोग खाने के लिए जीते हैं और कुछ जीने के लिए खाते हैं। उसी प्रकार मुझे लगता है कि कहूँ 'कुछ लोग वेतन पाने के लिए नौकरी करते हैं और कुछ अपनी सेवा में डूबकर उसका आनन्द लेने के लिए, जिनसे वे जुड़े हैं। नौकरी करते हैं तो वेतन तो मिलेगा ही। मनीष जी इस दूसरी कोटि के मनुष्य हैं। भारतीय वन सेवा के इस अधिकारी का प्राण बसता है जंगल में वन और वन्यप्राणी जैसे इनके पहले प्रेम हैं। वन और वन्य-जीवन की संस्कृति जिसकी साँसों में बसी न हो, वह ऐसा रसीला और प्रेरक जंगल-गीत गा ही नहीं सकता है। अद्भुत रसप्रवण है यह पुस्तक 'चल जंगल चल' ।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मनीष जी के स्वर में इस गीत - श्रृंखला के अनेक गीत - खण्डों को सुना मैंने। अतिरंजना ना समझी जाय तो मैं कहना चाहता हूँ कि जैसे महाकवि विद्यापति की पदावली का एक निश्चित लय है, जैसे रवि ठाकुर के गीत एक विशिष्ट ढंग से गाये जाते हैं, जिसे रवीन्द्र-संगीत कहा जाता है, उसी प्रकार इस 'जंगल-गीत' को एक विशेष स्वर में बाँधा है मनीष जी ने। और इस गीत को जब वे स्वयं अपने सुर में गाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे जंगल को आत्मसात कर लिया हो उन्होंने। इससे प्रकृति के साथ उनके अनन्य लगाव का अनुभव कर सकते हैं आप। उनके साथ बेतला अभ्यारण्य का भ्रमण करने का सुखद अनुभव भी मुझे है । लगेगा जैसे जंगल के एक-एक पेड़, एक-एक पशु-पक्षी से उनका आत्मीय लगाव है। वे भ्रमण करते हुए जंगल के उस हिस्से की एक-एक विशेषता बताते चलेंगे, वन-भ्रमण में डूबे, आनन्द लेते और आनन्द बाँटते !

'चल जंगल चल' प्रॉक्सी से पढ़ी जाने वाली पुस्तक नहीं है। इसका आनन्द डूबकर पढ़ने में है। पाठक या समीक्षक इसे पढ़ते हुए इसमें डूबते-उतराते रहेंगे। ऐसी पुस्तक की समीक्षा क्या होगी! अस्तु ।

'चल जंगल चल' को जंगल - गीत कहा गया है। रचनाकार ने अपना 'टारगेट ग्रुप' बच्चों को रखा है। उस दृष्टि से सरलता और सहजता है गीत - पंक्तियों में । परन्तु मेरा तो यह स्पष्ट मानना है कि बच्चों में तो वन्य-प्रेम जगाएगी ही, साथ-साथ प्रौढ़ और बड़ी आयुवर्ग के लोगों में भी जंगल के प्रति उतनी ही प्रीत जगाएगी यह गीत - श्रृंखला। मेरे विचार से देश की सभी राजभाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद किया जाना चाहिए और प्रत्येक विद्यालय और वन कार्यालय के पुस्तकालय में अनिवार्य रूप से उपलब्ध करायी जानी चाहिए यह जरूरी किताब । इससे कुछ गीत - खण्डों को छात्र - छात्राओं की पाठ्य-पुस्तकों में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

आइए, अब पुस्तक के पृष्ठों को पलटते हुए शेष बातें की जाएँ। इस पुस्तक के कुल 108 गीत- खण्डों को आठ शीर्षकों के अन्तर्गत सजाया गया है। पहले शीर्षक **प्रारम्भिका** (तेरह गीत - खण्ड) में पाठक को जंगल प्रवेश के कारण बताते हैं गीतकार । किन कारणों से वन में जाए मनुष्य इसे इस प्रकार कहा गया है :

चल जंगल चल/चल जंगल चल
जंगल अद्‌भुत एक कहानी
जंगल की मीठी है वाणी
ज्ञान चक्षु सबका यह खोले
तोल-मोल कर ही वन बोले

जंगल जाकर कथा समूची
समझो, यह ही जंगल की दरकार ..... जंगल
चल जंगल चल/चल जंगल चल

दूसरा शीर्षक है **वन भ्रमण की प्रेरणा** (चौदह गीत - खण्ड)। इस शीर्षक के अन्तर्गत दिए गये गीत-खण्डों में से एक बानगी देखें :

चल जंगल चल/चल जंगल
चल जाति नहीं पूछेगा जंगल
धर्म नहीं पूछेगा जंगल
पद क्या है ? यह ना पूछेगा

धन कितना है ? ना पूछेगा

सबका स्वागत आत्मीयता से

करता है सबका ही सत्कार...... जंगल

चल जंगल चल/चल जंगल चल

उपर्युक्त पंक्तियों में रचनाकार के चातुर्य को देखा जा सकता है। हम लोगों के सामाजिक व्यवहार में जो छद्म है, उस पर प्रच्छन्न व्यंग्य की ओर ध्यान अवश्य गया होगा आपका। पुस्तक में

तीसरा शीर्षक है **जैव-विविधता** (पंद्रह गीत - खण्ड)। जैव-विविधता के वर्णन की एक बानगी देखें:

चल जंगल चल/चल जंगल चल

जंगल में जीवों का मेला

कोई जीव न रहे अकेला

भाँति-भाँति के प्राणी अनेक

जैव-विविधता के ये टेक

कुछ प्राणी को माँस रुचे तो

कुछ प्राणी लेते हैं शाकाहार..... जंगल

चल जंगल चल/चल जंगल चल

'पारिस्थितिकीय' शीर्षक के अन्तर्गत कुल अठारह गीत - खण्डों को रखा गया है। इसमें एक स्थान पर कवि का कथन है कि जंगल 'अयाची हैं। किसी से कुछ माँगते नहीं हैं, किसी से कुछ लेते नहीं हैं अपितु सभी जीवों और वनस्पतियों की जीवन-व्यवस्था जंगल के भीतर एक-दूसरे पर आधारित होकर संचालित है। एक उदाहरण देखें:

चल जंगल चल/चल जंगल चल

कीटों के अण्डे, जल-पादप

भोजन बनते रोज गपागप

जल में मछली, मेढ़क, साँप

चीलों से जाते ये काँप

भक्षक - भक्ष्य सभी हैं मिलते

वन में चलता रहता यह व्यवहार..... जंगल

चल जंगल चल/चल जंगल चल

पुस्तक का पाँचवा शीर्षक है वन में ऋतुचक्र । इसमें चौदह गीत - खण्ड सम्मिलित हैं। रचनाकार की यह प्रतिभा है कि वे वनों की बात कहते-कहते जीवन-जगत का संकेत भी करते जाते हैं जगह-जगह । वे स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं कि रात के बाद सुबह निश्चित आएगी । गीत - खण्ड को देखें :

चल जंगल चल/चल जंगल चल

जंगल में 'झन-झन' हैं रातें
जंगल करता मन की बातें
चाँद-सितारे सुनते रहते
आँखों से आँसू हैं बहते

जंगल की रातें कहती हैं
मत डर, ऊषा लाती खुशी अपार.... जंगल

चल जंगल चल/चल जंगल चल

इतिहास - दर्शन शीर्षक के अन्तर्गत पन्द्रह गीत - खण्ड रखे गये हैं । पौराणिक वाङ्मय की कथाएँ वन की कथाएँ ही हैं, यह रचनाकार इस खण्ड में स्पष्ट करते हैं। यहाँ कदम-कदम पर इतिहास पसरा हुआ है। इस गीत खण्ड को देखें :

चल जंगल चल/चल जंगल चल
रामायण में आता जंगल
द्वापर युग बतलाता जंगल
कलियुग में प्राचीन काल हो
मध्यकाल या हाल- साल हो

जंगल को हर युग की बातें
ज्ञात, सूचना का इसमें अम्बार... जंगल

चल जंगल चल/चल जंगल चल

हमरी अज्ञानता और नासमझी से जंगल कष्ट में पड़ जाते हैं। लालच वश हम सब हरे-भरे पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाते आ रहे हैं। सैकड़ों-हजारों की संख्या में वन्यप्राणियों का शिकार करते रहे हैं। पचास वर्ष पहले तक और आज भी यह अपराध छिटफुट तरीके से हो ही रहा है। हमारी असावधानी के कारण वनों में आग लग जाती है। उससे वनों में वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं को नुकसान पहुँचता है और जैव-विविधता का क्षरण होता है। वन प्रकृति के उपहार हैं। इन्हें बचाना पड़ेगा । प्राकृतिक वनों का निर्माण संभव नहीं है । जंगल का क्षेत्र

सिकुड़ रहा है। इसलिए हाथी जैसे बड़े जन्तु हमारे गाँवों की ओर निकल पड़ते हैं और अनेक तरह की क्षति हम सबको बर्दाश्त करनी पड़ती है। ये सारी बातें कही गयीं है 'चल जंगल चल' के **'बोनक संकट'** शीर्षक के अन्तर्गत एगारह गीत - खण्डों में इस सातवें शीर्षक के अन्तर्गत आए गीत-खण्डों में से एक नमूना देखें :

चल जंगल चल/चल जंगल
चल खुला खजाना ना कोई पट
झेल रहे जंगल कई संकट
लालच में डूबे व्यापारी
तस्कर, लकड़ी-चोर, शिकारी
क्षति पहुँचाते हैं जंगल को
हम सबको मिलकर करना प्रतिकार .... जंगल
चल जंगल चल/चल जंगल चल

पुस्तक का अंतिम शीर्षक है **उपसंहार** । इसमें आठ गीत - खण्ड सम्मिलित हैं। ये गीत - खण्ड कहते हैं कि हमलोग वनों से अनेक प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि पश्चिमी देशों की देखा-देखी अब अपने देश में भी 'ओल्ड एज होम' बनाया जाना शुरू हो गया है, जहाँ उस माता-पिता को रखे जाने की तैयारी है, जिन्होंने बड़े-बड़े जतनों से हमें पाल-पोस कर बड़ा किया, योग्य बनाया। वे लोग अब हमें बोझों की तरह लग रहे हैं। इस समस्या की ओर रचनाकार कितने गम्भीर हैं, यह इस गीत - खण्ड में देखा जा सकता है :

चल जंगल चल/चल जंगल
चल जंगल में बूढ़ा बरगद है
पा उसको जंगल गदगद है
बहुत अधिक उसका है अनुभव
वर्ष सैकड़ों का हो, संभव
बिहुँस से सभी जंगल कहता
वृद्धों का सम्मान करो सत्कार... जंगल
चल जंगल चल/चल जंगल चल

पुस्तक के प्रारम्भ में गीतकार की भूमिका 'वन में कविता : कविता में वन' पढ़ने का अपना सुख है। जिसे कहते हैं 'स्थितिगत साक्ष्य' (सब्सटांशियल इविडेंस) सो दर्जनभर से अधिक ख्यात साहित्यकारों की पुस्तक के

लिए हार्दिक अनुशंसा पुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर देखी जा सकती है। इनमें से पुस्तक के गीतों के छन्द में ही डॉ० भीमनाथ झा जी के द्वारा प्रेषित अनुशंसा ऐतिहासिक महत्व की है।

तो अब मेरा लिखा हटाएँ । 'चल जंगल चल' उपराएँ और 108 मोतियों वाले इस गीत माला का आनन्द लेना शुरू करें। मुझे विश्वास है कि एक बार सम्पूर्ण माला बिना फेरे आप पुस्तक को छोड़ नहीं पाएँगे।... और तब बार-बार इस माला को फेरने की इच्छा भी होगी ।

****